अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 20.12.2016

पांचवा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

संजया – 25

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) सूक्ष्म संपराय – सन्निकर्ष द्वार।

(ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र – गति – स्थिति पदवी द्वार।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र – अंतर द्वार।

(घ) सामायिक चारित्र – परिणाम द्वार।

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र – उपसंपद्हान द्वार।

(च) यथाख्यात चारित्र – आकर्ष द्वार।

(छ) सूक्ष्मसंपराय चारित्र – प्रवज्या द्वार।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये – 5

(क) जीव की अनाहारक अवस्था किस समय पाई जाती है?

(ख) प्रत्येक शब्द से क्या तात्पर्य है?

(ग) आकर्ष किसे कहते हैं?

(घ) उत्सर्पिणी के तीसरे आरे में प्रथम तीर्थंकर का शासनकाल कितना है व उसमें कौनसा चारित्र होता है? उसके बाद दूसरे तीर्थंकर के शासनकाल में कौनसा चारित्र होता है?

(ड.) सामायिक चारित्र 7200 बार किस अपेक्षा से होता है?

(च) यथाख्यात चारित्र में दो कर्मों की उदीरणा हो तो किस अपेक्षा से कही गई है?

प्र.3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) अस्थित कल्प किसे कहते हैं व मध्यवर्ती बाईस तीर्थंकरों के काल व महाविदेह क्षेत्र में कौनसे कल्प अनिवार्य होते हैं?

(ख) अतीर्थी किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखें।

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं व उसके प्रकारों का वर्णन करें।

(घ) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले आठवें देवलोक से आगे क्यों नहीं जाते हैं?

(ङ) चारित्र के पर्यवों को क्या कहते हैं? चारित्र के स्थान जब असंख्य हैं तो उसके पर्यव अनंत क्यों?

(च) यथाख्यात चारित्र वाला यथाख्यात छोड़कर कितने व किन–किन स्थानों में, किस अपेक्षा से जा सकता है?

नियंठा – 25

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें – 5

(क) बकुश के पांचवें प्रकार का नाम व्याख्या सहित लिखें।

(ख) पुलाक निर्ग्रंथ में 3 शुभ लेश्या किस अपेक्षा से ली गई हैं?

(ग) निर्ग्रंथ में हीयमान परिणाम क्यों नहीं माना गया है?

(घ) एक जीव की अपेक्षा से बकुश का अंतर कितना है?

(ड) कषाय कुशील की संख्या कितनी माननी चाहिए?

(च) प्रतिसेवना, प्रतिसेवना को छोड़कर किन–किन स्थानों में जा सकता है?

(छ) बकुश में कितने व कौन–कौन से कल्प पाये जाते हैं?

प्र.5 कोई दस द्वार लिखें – 20

(क) पुलाक – प्रवज्या द्वार (ख) निर्ग्रंथ – परिणाम स्थिति द्वार (ग) प्रतिसेवना – काल द्वार

(घ) बकुश – सन्निकर्ष द्वार (ङ) पुलाक – ज्ञान द्वार अध्ययन

(च) कषाय कुशील – गति, स्थिति पदवी द्वार

(छ) बकुश – कर्म उदीरणा (ज) प्रतिसेवना – उपसंपद्हान (झ) निर्ग्रंथ – अंतर द्वार

(ञ) बकुश – क्षेत्र द्वार (ट) कषाय कुशील – कर्मबंध, कर्मवेदन

(ठ) प्रतिसेवना – स्थिति द्वार (एक जीव व अनेक जीव की अपेक्षा)।

गीतिका – नियंठा दिग्दर्शन – 10

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त लिखें – 2

(क) नियंठा दिग्दर्शन कौनसी गीतिका है? तथा इसकी रचना किस मिति, संवत व क्षेत्र में हुई?

(ख) प्रथम तीन निर्ग्रंथों को कौनसे चावलों की भांति माना गया है?

(ग) छठा गुणस्थान कब बदलता है?

प्र.7 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें – 8

(क) ''छठे गुणठाणे.....नी होय''। (ख) ''कषाय कुशील.....समुद्घात छः होय''।

(ग) ''अथवा टालोकर.....अवलोय''। (घ) ''एकम पूनम.....साध्वी होय''।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें –

(क) पच्चीस बोल – उन्नीसवां बोल 'अथवा' चौथे से सातवें गुणस्थान के नाम लिखें। 2

(ख) चतुर्भंगी – संवर के बीस भेद 'अथवा' अठारहवां बोल लिखें। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – सात गुणस्थान से बारह गुणस्थान तक 'अथवा' जीव के छह भेद से लेकर ग्यारह तक लिखें। 3

(घ) तत्त्वचर्चा – कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्त्व 'अथवा' नौ तत्त्व पर सावद्य निरवद्य लिखें। 3

(ङ) कर्म प्रकृति – आयुष्य कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति 'अथवा' संक्रमण व निधत्ति की पूर्ण व्याख्या करें। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश – दृष्टांत द्वार में से पुण्य पाप 'अथवा' औदायिक भाव लिखें। 4

(छ) प्रतिक्रमण – अचौर्य अणुव्रत के अतिचार 'अथवा' क्षमायाचना सूत्र लिखें। 3

(ज) जैन तत्त्व प्रवेश – दान दया अनुकम्पा द्वार को प्रारंभ से लिखते हुए संयति दान के दोहों तक 'अथवा' दया किसे कहते हैं व शील आदरियो.....मांय व लाडूं घेवर.....धर्म न थाय को पूरा करें। 4

(झ) इक्कीस द्वार – वेदक सम्यक्त्वी 'अथवा' सम्यक मिथ्यादृष्टि का बोल पूरा लिखें। 4

(ञ) बावन बोल – जीव पारिणामिक के दस भेद छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 'अथवा' बाईस परीषह किस–किस कर्म के उदय से? 4

(ट) लघुदण्डक –छब्बीसवां योग द्वार 'अथवा' संहनन द्वार लिखें। 3

(ठ) पाँच ज्ञान – अवधिज्ञान के अन्तगत–मध्यगत की भिन्नता 'अथवा' मल्लक दृष्टांत लिखें। 3